4. सबसे पुराने शहर - सिन्धु-घाटी के शहर

ज़रा अन्दाज़ा लगाओ भारत में सबसे पहले शहर कब बने होंगे-
100 साल पहले, या 5 हज़ार साल पहले, या 50 हज़ार साल पहले?
सबसे पुराने शहरों में आज के शहरों जैसा क्या रहा होगा? और आज के शहरों से फर्क क्या रहा होगा?
तुम उन सबसे पुराने शहरों के बारे में क्या जानना चाहते हो ?

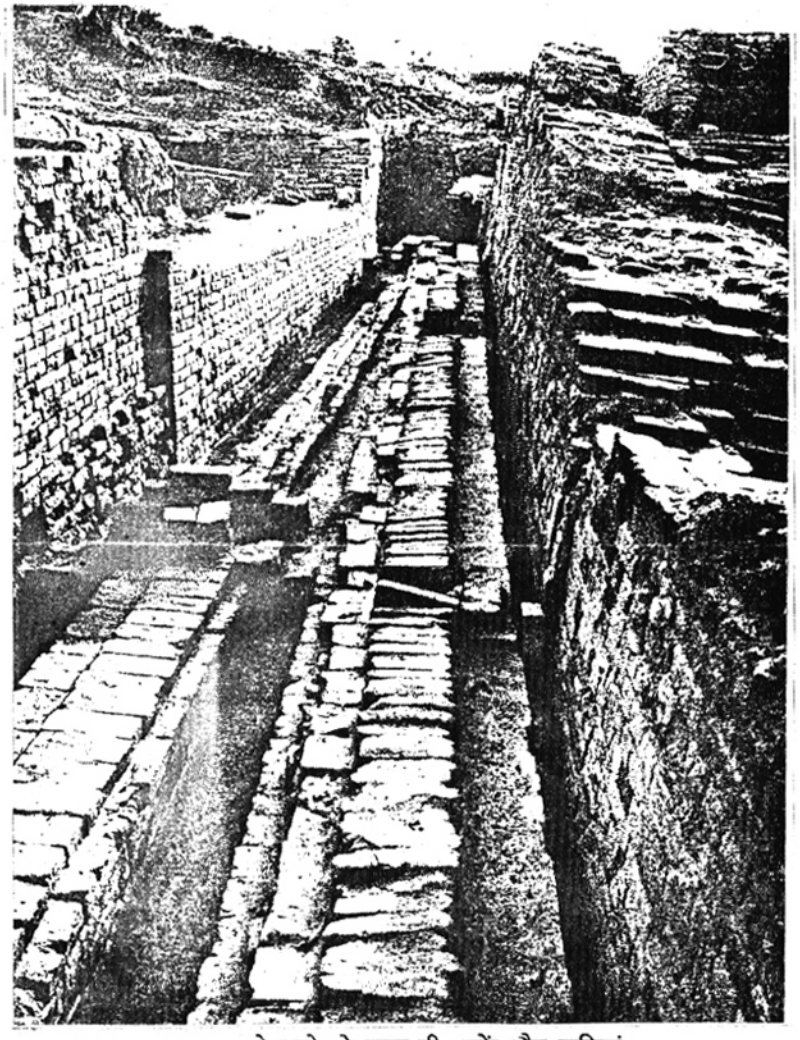

मोहनजोदड़ो शहर की सड़कें और नालियां

छह-सात हज़ार साल पहले भारत में भी कई जगहों पर खेती शुरू हुई थी। गांव बसे थे। इनके बारे में तुम पिछले पाठ में पढ़ चुके हो।

पुराने शहरों की खोज

सन् 1922 की बात है। तब भारत में अंग्रेज़ों का राज्य था। सिन्ध प्रान्त में एक गांव था मोहनजोदड़ो। एक बार इस गांव के लोग ज़मीन खोद कर मिट्टी निकाल रहे थे।

पर यह क्या? उन्होंने पाया कि नीचे तो ईंट की एक बड़ी दीवार दबी हुई थी। लोगों को बहुत **अचम्भा** हुआ। वे सोचने लगे- यहां कोई रहता था क्या? आखिर कितना पुराना है यह सब ?

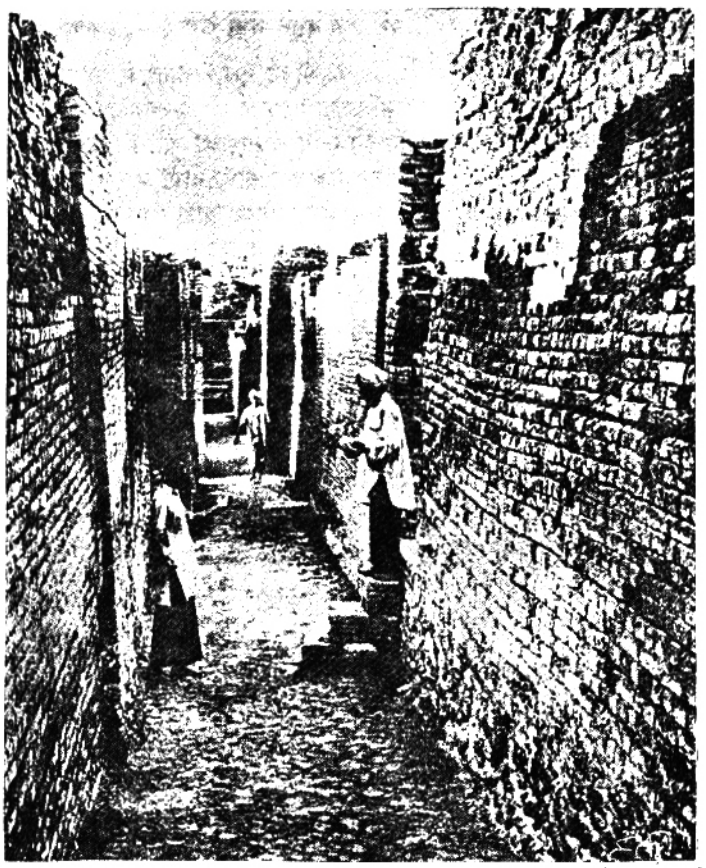

मोहनजोदड़ो की सड़क व घर

पुरानी चीज़ों की खोज करने वाले लोगों ने और गहरी खुदाई की तो नीचे दबा हुआ पूरा का पूरा शहर निकल आया। लोग नीचे उतर कर उसकी गलियों में घूमने लगे।

उन्होंने देखा कि घरों से उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हैं। मानो आज के घर हों! और घरों के बीच यह सड़क! जैसे आज शहरों में बनती है। इतना बड़ा शहर! यहां कितने लोग रहते होंगे?

जब खोजबीन की गई तो पता चला कि यह दबा हुआ शहर बहुत ही पुराना है। **आश्चर्य** तो तब हुआ जब पता लगा कि यह शहर चार-पांच हज़ार साल पुराना है। उस समय यह माना जाता था कि चार-पांच हज़ार साल पहले लोग खेती करके, पशु पाल के या शिकार आदि कर के जीते थे। क्या इतने पुराने समय में शहर भी बन गये थे?

गांवों के बीच शहर

धीरे-धीरे और खोज हुई। कई जगहों पर खुदाई की गई तो पता चला कि उस समय एक नहीं, दो नहीं, कई शहर थे। ये शहर भारत के सभी इलाकों में नहीं बसे थे। वे ख़ास कर एक बड़ी नदी और उसमें मिलने वाली दूसरी छोटी नदियों की **घाटी** में बसे हुए थे।

तुम मानचित्र -1 में देख कर बताओ कि उन सबसे पुराने शहरों के निशान जिन जगहों पर मिलते हैं उनके नाम क्या हैं ?

ये जगहें किस बड़ी नदी की घाटी में हैं?

किन नदियों के मैदानों में सबसे पुराने गांवों के निशान मिलते हैं?

क्या उन पुराने शहरों के चारों तरफ गांव बसे थे?

आज जो शहर बसे हैं, उनमें से किन शहरों को तुमने देखा है?

क्या आज के शहरों के चारों तरफ भी गांव हैं?

अगर गांव न हों तो क्या शहर बन सकते हैं?

सिन्धु नदी की घाटी और उसके आसपास के मैदान में गांवों को बसे हज़ार-दो-हज़ार साल हो गए थे। उसके बाद जाकर उन गांवों के बीच कई शहर बने।

बहुत से शहर जहां बसे थे वह इलाका आज पाकिस्तान देश में आता है। लेकिन रोपड़ नाम की जगह भारत के हरियाणा राज्य में है, कालीबंगां भारत के राजस्थान राज्य में और लोथल भारत के गुजरात राज्य में है।

भारत के सबसे पुराने शहर ——— नदी की घाटी में बने।

इन शहरों की खोज सन् ——— में हुई।

शहरों के निशान ———, ——— आदि जगहों पर मिलते हैं।

सिन्धु-घाटी के शहरों की इमारतें

खोदने पर शहरों में कई तरह की बड़ी-छोटी **इमारतें** मिलीं। कई दो मंजिला घर थे, अमीरों की कोठियां थीं, ग़रीब कारीगरों के छोटे-छोटे घर भी थे।

चित्र में उन इमारतों की दीवारें देखो। कितनी ऊंची दीवारें हैं। इन्हें किसी मिस्त्री ने बनाया होगा! दीवारें पक्की ईंटों की बनी हुई हैं। उस समय ईंट बनाने की भट्टियां रही होंगी! क्या पता भट्टियों पर कौन लोग काम करते थे! शायद तब ग़रीब मज़दूर हुआ करते थे!

शहर की सड़कें गांव की गलियों की तरह टेढ़ी-मेढ़ी नहीं थीं। बिल्कुल सीधी-सीधी थीं। सड़कों के किनारे पक्की नालियां बनी थीं। हर घर की नाली बड़ी नालियों से मिल जाती थी। यह सब देख कर लगता है कि ये शहर कितनी **सूझबूझ** के साथ बनाए गए थे।

ये शहर किसने बनाए, क्यों बनाए - यह कहानी तो शायद हमें कभी पता नहीं चलेगी। पर उनकी बची-खुची निशानियां देख कर हमें यह ज़रूर पता लग जाता है कि शिकारी मानव और शुरू के गांवों की तुलना में शहर के लोगों का जीवन कितना बदल गया था।

सिन्धु-घाटी के शहरों की खुदाई में पक्के घरों के अलावा बड़े-बड़े गोदाम मिलते हैं। आसपास के गांवों से अनाज इकट्ठा कर के इन्हीं गोदामों में रखा जाता होगा।

घरों और गोदामों के अलावा मोहनजोदड़ो में एक बड़ा सा तालाब मिला है। इसके चारों तरफ कमरे बने हुए थे। हर कमरे से तालाब तक आने के लिए अलग-अलग सीढ़ियां बनी थीं। क्या पता इस तालाब में कौन लोग नहाते थे और उनके नहाने के लिए इतने सारे इन्तज़ाम क्या सोच के किए गए थे!

खुदाई करने पर शहरों की कैसी इमारतें मिलती हैं?

ऐसा क्यों लगता है कि सिन्धु घाटी के शहर बहुत सोच-विचार कर बनाए गए थे?

शहरों को बड़े गोदामों में अनाज भर के रखने की ज़रूरत क्यों पड़ी होगी?

बड़ी बड़ी इमारतों के अलावा सिन्धु-घाटी के शहरों से कई छोटी मोटी चीज़ें भी मिलती हैं। इनके चित्र देखो।

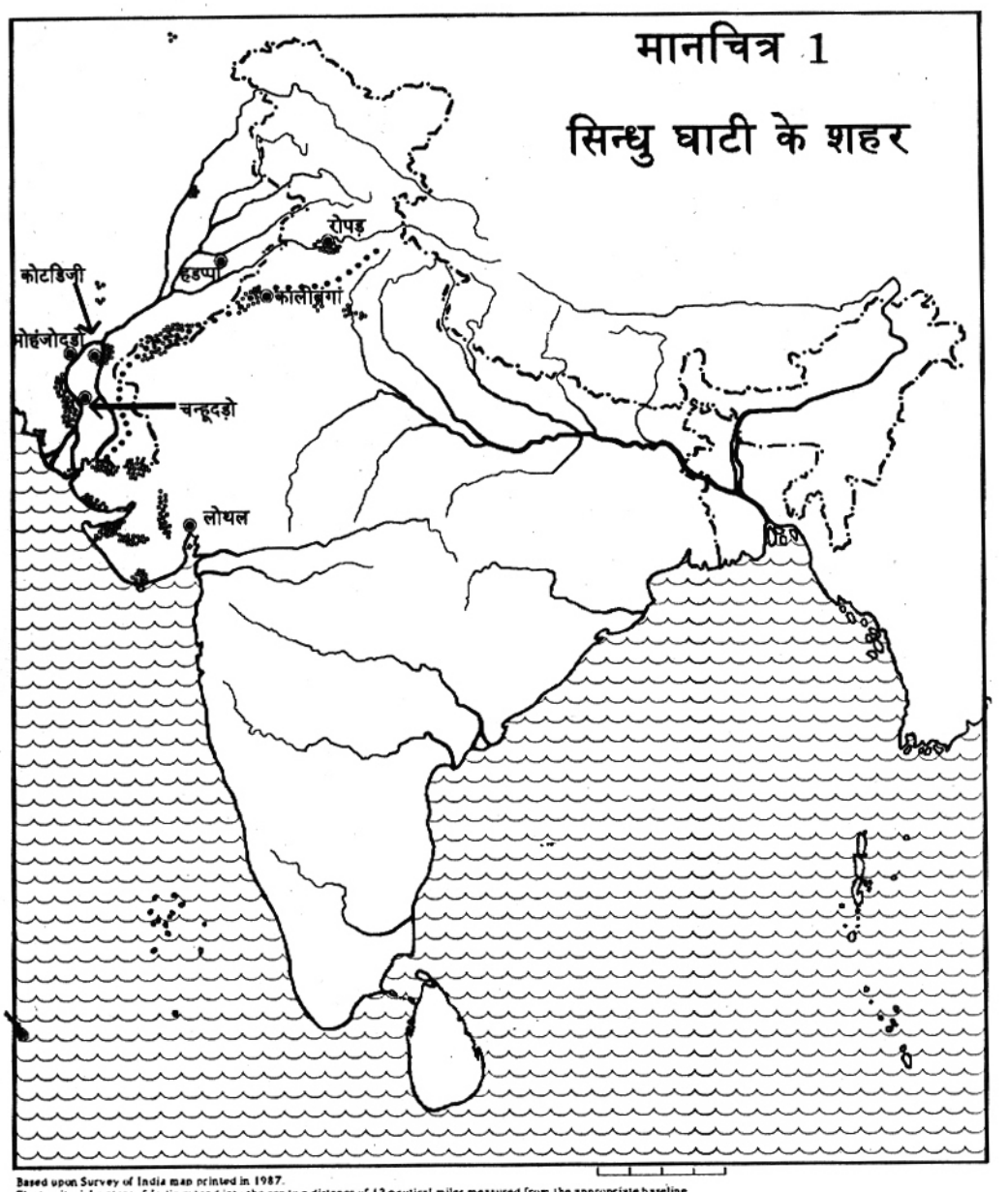

Based upon Survey of India map printed in 1987.
The territorial waters of India extend into the sea to a distance of 12 nautical miles measured from the appropriate baseline.
©Government of India copyright, 1987.

संकेत

- भारत की वर्तमान बाह्य सीमा
- सागर
- शहर
- गांव व बस्ती
- सरस्वती नदी

धातु की चीज़ें

कांसे की लंबी-पतली तलवार देखो – कितनी पैनी है।

क्या इस तरह की तलवार पत्थर से बनाई जा सकती थी?

धातु की और कौन सी चीज़ें चित्र में दिख रही हैं?

ये चीज़ें तांबे और कांसे की बनी हुई हैं। इसका मतलब यह हुआ कि सिन्धु घाटी के शहरों के समय तक लोग ज़मीन में से धातु निकालने और उसे साफ करने और गला कर चीज़ें बनाने के तरीके सीख गए थे।

पर आश्चर्य की बात तो यह है कि धातु की चीज़ें बनाने के साथ-साथ लोग पत्थर के औज़ार भी बनाया करते थे। इसका कारण शायद यह था कि तांबा व कांसा जैसी धातुएं, पत्थर की तुलना में बहुत ज़्यादा मज़बूत नहीं होतीं। ये धातुएं हर जगह आसानी से मिलती भी नहीं हैं। इसीलिए लोग कई औज़ार पहले की तरह पत्थर से ही बनाते रहे।

पहिया

खिलौने की बैल-गाड़ी देखो – लगता है जैसे अपने समय की बैलगाड़ी हो !

पर, एक फर्क है – ढूंढ सकते हो?

जो भी हो, इस बैल-गाड़ी में एक बहुत बड़ी खोज छिपी है -- वो है पहिया। पहिए से कितने काम आसान हो जाते हैं!

तुम अपने आसपास किस-किस काम में पहिए या चके का इस्तेमाल होता देखते हो?

आज हम यह नहीं बता सकते कि कैसे किसी ने पहिए की बात सोची होगी और पहला पहिया बनाया होगा। पर, सिन्धु घाटी के शहरों के समय

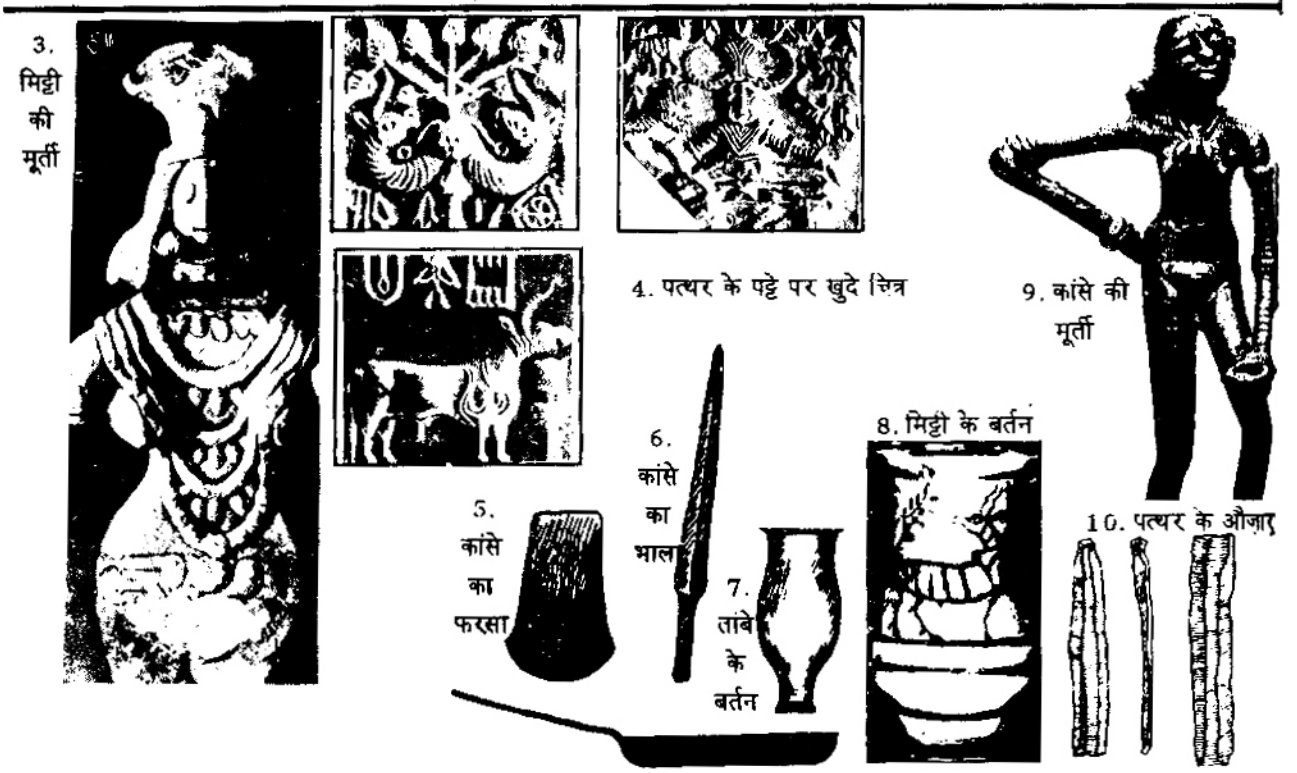

तक पहिए की खोज हो चुकी थी - तभी तो बैल-गाड़ी बनी।

उस समय चके का इस्तेमाल मिट्टी के बर्तन बनाने के लिए भी होने लगा था। इसलिए, पहले की तुलना में बहुत अच्छे किस्म के बर्तन बनाए जाने लगे थे।

तुम सोच कर बताओ कि सिन्धु घाटी के शहरों के लिए बैल-गाड़ी एक ज़रूरी चीज़ क्यों रही होगी?

जब लोग पत्थर से औज़ार व हथियार बना लेते थे तो उन्होंने धातु की चीज़ें बनाना क्यों शुरू किया होगा? धातु के क्या फायदे हैं? चर्चा करो ।

काम-धन्धे

चित्रों में दिख रही चीज़ों से तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो कि सिन्धु घाटी के शहरों में बहुत से कारीगर रहते थे। शहर के लोग अपनी ज़रूरत की सब चीज़ें घर पर नहीं बनाते थे। अलग-अलग चीज़ों को बनाने वाले अलग-अलग कारीगर थे जो अपनी चीज़ें बना कर दूसरों को बेचते थे।

क्या तुम उस समय रहने वाले कारीगरों की सूची बना सकते हो?

लिखाई

सिन्धु-घाटी के शहरों से एक ख़ास तरह की चीज़ें मिलती हैं। ये हैं पत्थर या मिट्टी के बने चौकोर पट्टे। पट्टों के चित्र देखो। तुम्हें पट्टों पर आदमी की **आकृति** और कुछ जानवरों, पौधों और बर्तनों की आकृति बनी दिख रही होगी।

पट्टों पर इस तरह की आकृतियां भी बनी हैं–

11. पत्थर की मूर्ति

12. मिट्टी के पट्टे पर खुदा चित्र

13. मिट्टी के खिलौने

14. सोने चांदी के गहने

15. खिलौने की बैल गाड़ी

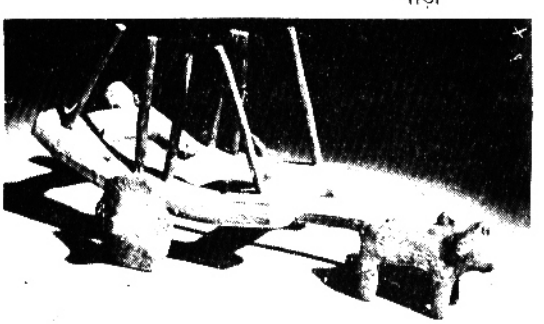

पट्टों पर ऐसा जो बना है उसे अपनी कापी में उतारो।

कुछ लोग मानते हैं कि यह उस समय की लिखाई है। अगर यह सच है तो यह कैसी लिखाई? लगता है जब शुरू में मनुष्य ने लिखना शुरू किया तो आज के अक्षरों जैसे अक्षर नहीं बनाए। उनके अक्षर चित्रों जैसे लगते हैं।

क्या तुम इस लिखाई को समझ पा रहे हो?

दरअसल विद्वान लोग भी सिन्धु-घाटी के शहरों की लिखाई को नहीं पढ़ पाए हैं। इसीलिए उन शहरों के बारे में बहुत सी बातें हम जान नहीं पा रहे हैं।

व्यापार

कुछ विद्वान सोचते हैं कि ये पट्टे वास्तव में व्यापारियों की मुहरें थे और व्यापारी जब एक जगह से दूसरी जगह सामान भेजते होंगे तो सामान बांध कर उस पर गीली मिट्टी थोपते होंगे और गीली मिट्टी पर अपनी मुहर से छाप बना देते होंगे ताकि उनके सामान की पहचान बनी रह सके।

लोथल से मिला नांव का नमूना

ऐसे पट्टे दूसरे देशों में भी पाए गए हैं - ख़ासकर ईराक देश में।

एशिया के नक्शे में ईराक देश पहचानो। देखो कि यह जगह सिन्धु-घाटी से कितनी दूर है?

ईराक में सिन्धु-घाटी के पट्टे कैसे और क्यों पहुंचे होंगे? लगता है कि उन दिनों ईराक और सिन्धु-घाटी के शहरों के बीच व्यापार होता था।

शहरों की खुदाई से मिली किन चीज़ों से पता चलता है कि वे लोग नदी या समुद्र पार करते थे?

सिन्धु-घाटी के शहरों में कई ऐसी चीज़ें मिलती हैं जो आसपास नहीं पाई जाती थीं। जैसे, नीले रंग का एक बड़ा सुन्दर पत्थर जिससे गहने बनाए जाते थे, शहरों की बची हुई चीज़ों में मिलता है। चांदी, सोने, सीसे व तांबे की बनी कई चीज़ें भी मिलती हैं, पर ये धातुएं सिन्धु-घाटी में नहीं पाई जातीं। इन्हें दूसरी जगहों से ही मंगाया जाता होगा।

दूर की जगहों से ये चीज़ें मंगवाना तो बहुत महंगा पड़ता होगा!

क्या तुम्हें लगता है कि सिन्धु-घाटी के शहरों में ऐसे अमीर लोग थे जो कीमती चीज़ें मंगवा के इस्तेमाल करते थे?

तुम्हारे मन में यह सवाल उठ रहा होगा कि अगर व्यापार होता था तो क्या सिन्धु-घाटी के शहरों से सिक्के भी मिलते हैं? नहीं, सिक्के तो नहीं मिलते। फिर किसी और ढंग से व्यापार होता होगा! एक तरह के सामान के बदले में दूसरी तरह का सामान दिया जाता होगा, पैसे नहीं!

देवी-देवता

क्या हम सिन्धु-घाटी के शहरों की चीज़ों को देख कर यह भी सोच सकते हैं कि वे लोग किसको पूजते थे?

तुम्हारे अनुमान से इन चित्रों में से कौन सी चीज़ों को सिन्धु-घाटी के शहरों के लोगों द्वारा पूजा जाता होगा?

शायद यह मिट्टी की मूर्ति उन लोगों की देवी की मूर्ति थी। पत्थर के पट्टे पर एक आकृति के सिर पर भैंसे का सींग है। उसके चारों तरफ कई जानवर बने हैं। यह कोई देवता रहा होगा! शायद उसे लोग पशुओं का देवता मान कर पूजते थे।

एक पट्टे पर क्या तुम्हें एक अजीब सा जानवर खुदा दिख रहा है? दूसरे पट्टे पर पीपल की पत्तियां और सांप भी बना हुआ है! शायद इनकी भी पूजा होती थी। इन बातों का तो हम अन्दाज़ा ही लगा सकते हैं, पक्की तरह से नहीं कह सकते।

ऊपर बताई किन चीज़ों को आजकल भी पूजते हैं?

शहरों का खत्म होना

आज से चार-पांच हज़ार साल पहले सिन्धु-घाटी में शहर बने थे। ये शहर नौ सौ सालों तक बने रहे। फिर किसी कारण से उजड़ गए और मिट्टी में दब के रह गए। उन शहरों के आसपास जो गांव थे, वे बाद में भी बने रहे।

सिन्धु-घाटी के शहरों के खत्म होने के बाद कई सौ सालों तक भारत में कोई शहर नहीं बना।

अभ्यास के प्रश्न

1. यहां मनुष्य के इतिहास की कुछ बातें लिखी हैं। इनमें से कौन सी पहले हुईं और कौन सी बाद में – सही क्रम में जमा कर लिखो –

   1. लिखना-पढ़ना 2. जंगल काट के खेत बनाना 3. जंगल से फल बटोर कर लाना 4. पशुओं को पालना 5. जंगली जानवरों का शिकार करना 6. शहरों का बनना 7. गाँव बसाना 8. दूर-दूर तक व्यापार करना

   सबसे पहले —
   उसके बाद —
   उसके बाद —

2. सिन्धु-घाटी के शहरों से मिलने वाले पट्टों के बारे में 4 मुख्य बातें बताओ।
3. अगर सिन्धु-घाटी के शहरों में उपयोग होने वाली लिखाई को हम पढ़ सकें तो उन लोगों के बारे में क्या-क्या जान सकते हैं? कोई तीन बातें सोचो।
4. सिन्धु-घाटी के शहरों के बारे में लोगों को पता कैसे चला? इस प्रश्न का उत्तर पाठ के **किस हिस्से** में मिलेगा – सही विकल्प चुनो। (1) शहरों की इमारतें (2) गांवों के बीच शहर (3) पुराने शहरों की खोज।
5. तुम्हें सिन्धु घाटी के शहरों में ऐसी क्या नई बातें दिखाई दीं जो शुरू के गांवों में नहीं पाई जाती थीं? सूची बनाओ।
6. मानचित्र क्र. 1 किस के बारे में है? इसमें क्या-क्या बताया गया है – चार-पांच वाक्यों में लिखो।
7. क्या तुम्हें पाठ पढ़ के सबसे पुराने शहरों के बारे में अपने सब प्रश्नों के जवाब मिल गये ? क्या तुम **सवालीराम** से भी कुछ सवाल पूछना चाहते हो ?

जो कुछ देखें जिससे खेलें
हाथों में मिट्टी लेके
हम झटपट गढ़ लें

बहुत पुराने
और अंजाने
दिनों की बातें
देखीं हमने

चलो बनाएं
मिट्टी लाएं
गुफा और भाला
घर और चूल्हा

जो मन भाए
गढ़ते जाएं
बीती सारी
बात बताएं॥

हर शनिवार को बाल सभा में हफ्ते भर पढ़े गए पाठों की बातों को लेकर मिट्टी के खिलौने बनाओ।

मानचित्र में नदियां

तुम जानते तो होगे कि नदियां आमतौर पर पहाड़ों से निकलती हैं, फिर मैदानों से बहती हुई सागर में जा कर मिल जाती हैं।

मानचित्रों में नदियों को काली या नीली लकीर से दिखाया जाता है। नदियां शुरुआत में पतली होती हैं और सागर तक पहुंचते-पहुंचते चौड़ी हो जाती हैं।

चित्र 1 में तुम नदी, ज़मीन और सागर को पहचानो। यह नदी कहां से शुरू हुई है? यह किस दिशा की ओर बह रही है? यह कहां जा कर खत्म हुई?

चित्र 1

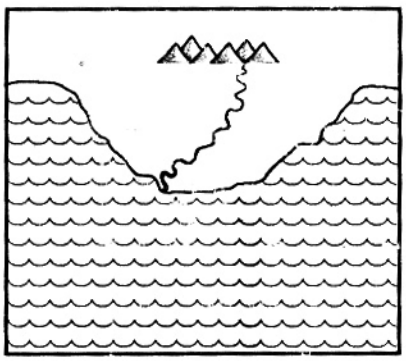

क्या नदी सागर से पहाड़ की ओर बह सकती है?

चित्र 2 में एक बड़ी नदी में कई छोटी नदियां मिल रही हैं और बड़ी नदी सागर में जा कर मिल रही है।

1. बड़ी नदी पर शुरू से आखिर तक पेंसिल फेरो।
2. उसमें कितनी छोटी नदियां मिल रही हैं?
3. जहां नदी सागर से मिल रही है वहां एक गोला बनाओ।

इस पुस्तक के अंत में भारत की नदियों का मानचित्र है। तुम उस मानचित्र को अपनी कापी में उतार लो।

चित्र 2

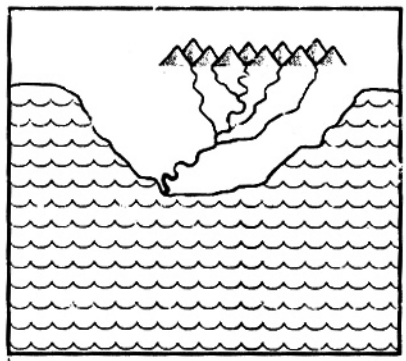

मनुष्य के इतिहास में गुज़रता समय